

Rohtas Mahila College, SASARAM

Study Material for B.A. Part II

SANSKRIT (Paper VII)

Dr. Savitri Singh
Associate Professor
Deptt. of Sanskrit
R.M.C. SASARAM

Date
29.05.2020
Friday

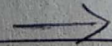
Topic: व्यञ्जना का स्वल्प पूर्व भेद (कोट्यधीपकोः
आ)

अभिधायिनी व्यञ्जना के लक्षण के सम्बन्ध में आचार्य विश्वनाथ ने कहा है संयोग आदि की सहायता से अनेकार्थक शब्द के किसी एक प्रासंगिक अर्थ का निर्णय हो जाने पर भी जिसके द्वारा अन्य अप्रासंगिक अर्थ का ज्ञान होता है वह अभिधायिनी/अभिधायिनी व्यञ्जना कहलाती है।

जब अनेकार्थक शब्दों में यह शब्द किस अर्थ को बोधक है, यह निर्णय नहीं होता, तब नीचे लिखे साधनों से उनके अर्थ का निर्णय किया जाता है—(1) संयोग, (2) विप्रयोग (3) साहचर्य (4) विरोधिता (5) अर्थ (6) प्रकरण (7) लिंग (8) अन्यशब्दों की सन्निधि (9) सामर्थ्य (10) आचिन्त्य (11) देश (12) काल (13) व्यक्ति (14) स्वर आदि। ये चारों अनेकार्थक शब्दों का जहाँ पर निश्चय नहीं हो पाता, वहाँ विशेष अर्थ को बोध कराते हैं।

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता ।

अर्थः प्रकरणं लिंगं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः ॥



लक्षणा मूला व्यञ्जना (विश्वनाथ)

लक्षणीपास्यते यस्य कृते तनु प्रयोजनम् ।

यथा प्रत्याय्यते सा स्याद् व्यञ्जना लक्षणाऽऽश्रया ॥ १०॥

(काव्यटीपिका द्वितीयशिखा)

जिस अर्थ की प्रतीति के निमित्त लक्षणा मानी जाती है, वही प्रयोजन है, तथा जिस शक्ति के द्वारा प्रतीति होती है वह लक्षणा मूला व्यञ्जना कही जाती है ।

उपासना आशयण और विद्यान पर्यायवाची शब्द है । प्रत्यायन का अर्थ बोधन है । जैसे 'गंगायां घोषः' इस वाक्य में 'गंगा' पद का अर्थ अभिव्या शक्ति द्वारा प्रवाह (जल-धारा) जाना गया है । तदन्तर 'गंगा' में 'घोषाधारता' अनुपपन्न जानकर तट रूप अर्थ को बोध कर लक्षणा भी शान्त हो गई । अब शीतल-पावन-प्रतीति रूप प्रयोजन जिस शक्ति के द्वारा शब्द का प्रवाह रूप अर्थ कहकर अभिव्या तथा तट रूप अर्थ कहकर लक्षणा के विरत हो जाने पर जिस शक्ति के प्रभाव से शीत्य लँ पावनत्व रूपी प्रयोजन की प्रतीति होती है, उसे लक्षणा मूला व्यञ्जना कहते हैं ।

इस प्रकार व्यञ्जना के दो भेदों शाब्दी व्यञ्जना और आर्थ व्यञ्जना में शाब्दी व्यञ्जना के भी दो भेद हुए - अभिव्या मूला एवं लक्षणा मूला ।

अब आर्थ व्यञ्जना का निरूपण करते हुए आचार्य विश्वनाथ कहते हैं !

वस्तुषोद्धयवाक्यानां काकोशैल्यऽऽदिकस्य च ।
वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत् सापसम्भवा ॥ ११ ॥

वक्त्रा, षोडश्या, वाम्भ, कानु और चेष्य आदि
की विलक्षणता के कारण जो शब्दशक्ति अन्ध अंध को बोध्य
कराती है उसे आर्षि या अर्षिसम्भवा व्यञ्जना कहते हैं।
जैसे गतोऽस्तमके! सूर्य अस्त हो गये। यहाँ
पर वक्त्रा तथा षोडश्या के आस्त्विक द्विजाति होने पर यह
सन्ध्यावन्दन का अवसर है, इस अर्षि की प्रतीति होगी।
उवाचवालो के वक्त्रा तथा षोडश्या होने पर गायों को लौकिक
इस घर चलेगें, यह व्यञ्जयार्थ प्रतीत होता है।
अर्षानुसन्धान से व्यञ्जयार्थ बोध्य होने के कारण
आर्षि व्यञ्जना कही गयी।

— 7 —